महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का
देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद के जयन्ती–समारोह में सम्बोधन –
(दिनांक 03.12.2015 अप0 3.30 बजे, बिहार विद्यापीठ, सदाकत आश्रम, पटना)

.....

भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की पौत्री आदरणीया श्रीमती तारा सिन्हा जी, बिहार विद्यापीठ के अध्यक्ष एवं बिहार के कृषि उत्पादन आयुक्त श्री विजय प्रकाश जी, बिहार विद्यापीठ के मंत्री–द्वय डॉ0 शिववंश पाण्डेय एवं श्री राम अवधेश सिंह जी तथा ए0 एन0 सिन्हा इंस्टीच्यूट, पटना के पूर्व निदेशक डॉ0 एम0 एन0 कर्ण जी, कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य जन, मीडिया प्रतिनिधिगण, बहनों एवं भाइयों !

भारत के प्रथम राष्ट्रपति और स्वतंत्रता–संग्राम के अग्रणी सेनानी देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की 131वीं जयन्ती के अवसर पर बिहार विद्यापीठ में आकर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। यहाँ आकर मुझे उन पवित्र स्थलों को देखने का सुअवसर मिला, जहाँ से स्वतंत्रता पूर्व स्वतंत्रता–संग्राम का सूत्र–संचालन देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद किया करते थे और राष्ट्रपति पद से निवृत्ति के बाद भी दिल्ली के भव्य राष्ट्रपति भवन से यहाँ की कुटीनुमा दो कमरों के खपरैल मकान में रहना उन्होंने पसन्द किया था। मैंने आज उन पुनीत स्थानों का भी दर्शन किया जहाँ स्वतंत्रता–संग्राम से पहले महात्मा गाँधी ठहरा करते थे और प्रार्थना सभा आदि किया करते थे। साथ ही विद्यापीठ के दो अन्य कर्णधारों मौलाना मजहरूल हक और ब्रजकिशोर प्रसाद के स्मारकों को भी देखने का मुझे सुयोग मिला। मैंने राजेन्द्र बाबू के अंतिम निवास को देखा जो आज संग्रहालय के रूप में हम सबके सामने है। उन सभी स्थानों के परिदर्शन से ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं किसी स्वतंत्रता–संग्राम के तीर्थस्थल का दर्शन कर रहा हूँ।

देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बिहार ही नहीं सम्पूर्ण देश के गौरव पुरुष थे। विद्यापीठ के इसी खपरैल मकान से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अंतरिम सरकार में वे खाद्य एवं कृषि मंत्री का पद सम्हालने दिल्ली गए थे। देश में उस समय खाद्य की जो विकराल समस्या थी, उसे दूर कर देश को खाद्य के मामले में आत्म–निर्भर बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

वे संविधान–सभा के अध्यक्ष भी रहे। संविधान–निर्माण में उनकी भूमिका के लिए देश सदैव उनका ऋणी रहेगा। यह सुखद संयोग ही है कि संविधान के मूल पाठ पर बिहार के दो महापुरूषों –डॉ0 सच्चिदानन्द सिन्हा तथा डा0 राजेन्द्र प्रसाद के ही हस्ताक्षर हैं।

1950 से 1962 तक वे भारत गणराज्य के राष्ट्रपति पद पर समासीन रहे। उन्होंने राष्ट्रपतित्व–काल में अपने आचरण, व्यवहार एवं राजनयिक कुशलता से देश–विदेश में जो ख्याति अर्जित की, वह विश्व इतिहास का अद्भुत उदाहरण है। प्रथम राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने राष्ट्रपति पद की गरिमा और प्रतिष्ठा को जो मर्यादा प्रदान की, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

गाँधी जी के सन्निकट अनुयायी के रूप में राजेन्द्र बाबू विख्यात थे। गाँधी जी ने तो यहाँ तक कहा था कि ''अगर मैं राजेन्द्र प्रसाद को जहर का भी प्याला दे दूँ, तो बिना आना–कानी किए वे उसे पी जायेंगे।'' चम्पारण–सत्याग्रह के दौरान राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू को गाँधी जी ने अपना बायाँ और दाहिना हाथ कहा था।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि बिहार विद्यापीठ राजेन्द्र बाबू के आदर्शों को क्रियात्मक एवं व्यावहारिक रूप देने में पूरी तरह तत्पर है। राजेन्द्र बाबू का जीवन त्याग और तपस्या की एक खुली किताब है। आज आवश्यकता है कि राजेन्द्र बाबू के आदर्शों पर समाज–निर्माण के लिए हम दृढ़संकल्पित हो जाएँ। राजेन्द्र बाबू के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि

तभी हो सकती है, जब हम उनके सभापतित्व में बनाए गए संविधान के अनुसार समतामूलक समावेशी समाज का निर्माण कर के दिखाएँ।

हम सभी अवगत हैं कि राजेन्द्र बाबू एक अद्‌भुत मेधावी छात्र रहे हैं जो अपने शैक्षिक जीवन में सदैव प्रथम श्रेणी से परीक्षाएँ उत्तीर्ण करते रहे। उनकी शैक्षिक प्रतिभा का तत्कालीन अंग्रेज शिक्षकगण भी लोहा मानते थे। तभी तो एक अंग्रेज परीक्षक ने टिप्पणी की थी कि 'म्मांउपदमम पे इमजजमत जींद म्मांउपदमतश अर्थात्, परीक्षार्थी परीक्षक से अधिक योग्य है। शैक्षिक जीवन से लेकर उनके सम्पूर्ण कार्यकाल की अनेक घटनाएँ उनकी अनुपम तेजस्विता का ज्वलंत उदाहरण हैं।

मुझे लगता है, कि बिहार विद्यापीठ के इस पावन स्थल को एक पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित किया जाना चाहिए। विद्यालयी बच्चों को यहाँ भ्रमण के लिए लाने से उनमें त्याग और समर्पण की भावना विकसित हो सकेगी। शिक्षा अधिकारियों एवं विद्यालय–प्रबंधकों को इस दिशा में पहल करनी चाहिए। बिहार विद्यापीठ एवं हम सभी देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सपनों को साकार करने के अपने प्रयासों में सफल हों, इस मंगल कामना के साथ देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की पावन स्मृति को प्रणाम करते हुए मैं अपना निवेदन समाप्त करता हूँ।

जय हिन्द !

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।